परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

पहली नज़र में यह अजीब लग सकता है कि सर्वज्ञानी (सब कुछ जानने वाला) परमेश्वर प्रश्न पूछे या किसी बात की जाँच करता हुआ दिखाई दे। उदाहरण के लिए, कैन और हाबिल की घटना को देखें। जब कैन अपने भाई की हत्या कर देता है, तब परमेश्वर उससे पूछता है:

“तब यहोवा ने कैन से कहा, ‘तेरा भाई हाबिल कहाँ है?’ उसने कहा,
‘मैं नहीं जानता; क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?’”
— उत्पत्ति 4:9 (Hindi O.V.)

स्वाभाविक रूप से हमारे मन में यह प्रश्न उठता है—यदि परमेश्वर पहले से सब जानता था, तो उसने यह क्यों पूछा?

यह अज्ञानता का विषय नहीं है, बल्कि दैवी नम्रता का उदाहरण है—जब परमेश्वर मनुष्यों से ऐसे ढंग से संवाद करता है जिसे वे समझ सकें। धर्मशास्त्र में इसे एंथ्रोपोपैथिज़्म कहा जाता है—अर्थात परमेश्वर हमारे हित में मानवीय भावनाओं या सोच के रूप में स्वयं को प्रकट करता है।

कैन पर तुरंत दोष लगाने के बजाय, परमेश्वर उसे स्वीकार करने और मनन करने का अवसर देता है। यह परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण स्वभाव के अनुरूप है, क्योंकि वह दोषारोपण से अधिक पश्चाताप चाहता है

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

(देखें: 2 पतरस 3:9).

संवाद में परमेश्वर की नम्रता

पूरे पवित्रशास्त्र में हम देखते हैं कि परमेश्वर अक्सर मनुष्यों के साथ संवाद के लिए—यहाँ तक कि मध्यस्थता के लिए—स्थान देता है। इसका एक प्रभावशाली उदाहरण इस्राएल के विद्रोह के बाद मूसा के साथ उसका संवाद है:

“अब मुझे अकेला छोड़ दे, कि मेरा क्रोध उन पर भड़के और मैं उन्हें भस्म कर डालूँ… तब मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से बिनती की और कहा, ‘हे यहोवा… अपने भयंकर क्रोध से फिर जा और अपनी प्रजा पर आने वाली इस विपत्ति से मन फिरा।’ … तब यहोवा ने उस विपत्ति से मन फिराया…”
— निर्गमन 32:10–14 (संक्षेप)

क्या परमेश्वर को मूसा की सलाह की आवश्यकता थी? नहीं। फिर भी उसने मूसा को मध्यस्थ बनने दिया—जो आने वाले समय में मसीह की उस भूमिका की झलक है, जिसमें वह हमारे लिए सदा मध्यस्थता करता है (देखें: इब्रानियों 7:25). इससे यह भी प्रकट होता है कि परमेश्वर मनुष्यों के साथ संबंध के स्तर पर संवाद करना चाहता

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

है।

यही वह सत्य है जिसे धर्मशास्त्री संबंधात्मक ईश्वरवाद कहते हैं—अर्थात परमेश्वर की प्रभुता में उसकी सृष्टि के साथ वास्तविक और प्रत्युत्तरशील सहभागिता सम्मिलित है।

परमेश्वर जाँच करता है—इसलिए नहीं कि वह नहीं जानता, बल्कि इसलिए कि वह न्यायी है

एक और उदाहरण सदोम और अमोरा का है, जिन्हें नाश करने से पहले परमेश्वर “जाँच” करने की बात करता है:

“तब यहोवा ने कहा, ‘सदोम और अमोरा की दुहाई बड़ी है… मैं
नीचे जाकर देखूँगा कि जो दुहाई मेरे पास पहुँची है, उसके अनुसार उन्होंने काम किया है या नहीं; और यदि नहीं, तो मैं जान लूँगा।’”
— उत्पत्ति 18:20–21 (Hindi O.V.)

यहाँ भी परमेश्वर अज्ञानी नहीं है। वह यह दिखा रहा है कि उसका न्याय तौला हुआ, धर्मी और पूरी तरह न्यायसंगत है। वह न्यायिक प्रक्रिया का आदर्श प्रस्तुत करता है—जो बाइबल में न्याय का

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

एक महत्वपूर्ण विषय है। परमेश्वर के कार्यों में यह पारदर्शिता हमें उसके न्याय पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करती है।

परमेश्वर की सर्वोच्च नम्रता: देहधारण

परमेश्वर की नम्रता सबसे स्पष्ट रूप में अवतार में दिखाई देती है—जब परमेश्वर यीशु मसीह में मनुष्य बन गया:

“अपने में वही मनोभाव रखो जो मसीह यीशु में था; जो परमेश्वर
के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश
में रखने की वस्तु न समझी, परन्तु अपने आप को शून्य कर दिया
और दास का स्वरूप धारण किया… और मनुष्य के रूप में पाया
जाकर उसने अपने आप को दीन किया और मृत्यु तक, वरन् क्रूस की मृत्यु तक आज्ञाकारी रहा।”
— फिलिप्पियों 2:5–8 (Hindi O.V.)

यह केनोसिस का रहस्य है—मसीह का “अपने आप को शून्य करना।” इसका अर्थ यह नहीं कि उसने अपनी दिव्यता खो दी, बल्कि यह कि उसने अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों को अलग रख दिया। उसने दुःख सहना, सीखना, रोना और यहाँ तक कि मरना भी चुना—ताकि हम कभी यह न कह

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

सकें कि “परमेश्वर मेरे दर्द को नहीं समझता।”

इब्रानियों का लेखक इसकी पुष्टि करता है:

“क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी न हो सके; वरन् वह जो सब बातों में हमारी
नाईं परखा गया, तौभी निष्पाप रहा।”
— इब्रानियों 4:15 (Hindi O.V.)

यीशु ने दरिद्रता (मत्ती 8:20), अस्वीकार (यूहन्ना 1:11), परीक्षा (मत्ती 4:1–11), विश्वासघात और मृत्यु का अनुभव किया—ताकि वह हमारा सिद्ध उद्धारकर्ता और सहानुभूतिपूर्ण प्रभु बन सके।

वह “निर्बलता” जो संसार का उद्धार करती है

संसार की दृष्टि में ऐसी नम्रता मूर्खता या दुर्बलता लग सकती है, परन्तु पवित्रशास्त्र इस सोच को उलट देता है:

“क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों से अधिक बुद्धिमान

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों से अधिक बलवान है।”
— 1 कुरिन्थियों 1:25 (Hindi O.V.)

परमेश्वर की वही प्रतीत होने वाली “निर्बलता” हमारे उद्धार का मार्ग बनी। उसकी मृत्यु ने हमें जीवन दिया, और क्रूस पर उसकी दिखने वाली “पराजय” ने पाप और मृत्यु पर हमारी विजय सुनिश्चित की।

यह सब हमें क्या सिखाता है?

परमेश्वर की नम्रता केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि हमारे लिए एक जीवित उदाहरण है। हमें भी वही मनोभाव रखने के लिए बुलाया गया है:

“किसी काम को विरोध या व्यर्थ घमण्ड से न करो, परन्तु दीनता
से एक-दूसरे को अपने से श्रेष्ठ समझो… अपने में वही मनोभाव रखो जो मसीह यीशु में था।”
— फिलिप्पियों 2:3, 5 (Hindi O.V.)

हम केवल नम्रता के द्वारा उद्धार नहीं पाए—हमें नम्रता में

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं
जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

चलने के लिए भी बुलाया गया है।

“तुम सब आपस में एक-दूसरे के प्रति दीनता धारण करो; क्योंकि लिखा है, ‘परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता है, परन्तु
दीनों पर अनुग्रह करता है।’”
— 1 पतरस 5:5 (Hindi O.V.)

परमेश्वर के “प्रश्न,” उसकी “जाँच,” और हमारे साथ मानवीय ढंग से संवाद करने की उसकी इच्छा—ये सब उसके प्रेमी और नम्र हृदय को प्रकट करते हैं। वह दूर या उदासीन नहीं है। वह हमारी कहानी में उतरा, हमारे जैसा बना, और हमें बचाने के लिए मानव पीड़ा की गहराइयों को सहा।

आइए उसके उदाहरण से सीखें—सच्ची सामर्थ नम्रता में ही है।

आओ, प्रभु यीशु!
— प्रकाशितवाक्य 22:20

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:

परमेश्वर कभी-कभी ऐसा क्यों प्रतीत होता है मानो वह नहीं जानता?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

WhatsApp